यतीमो के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

नोट: यहां जो हुकूक बयान हुए है उनमे मुस्लिम और गैर मुस्लिम बराबर है.

१} बुखारी की रिवायत का खुलासा | रावी सहल बिन सअद रदी.

यतीमों की देख भाल करने वाले जन्नत मे रसूलुल्लाहﷺ के करीब रहेंगे और ये खुशखबरी सिर्फ यतीम ही की देख भाल करने वाले के लिए नही हे बल्की हर उस शख्स के लिए हे जो मजबूर और मोहताज लोगों की देख भाल करता हे.

२} इबने माजा की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया मुसलमानो के घरों मे सबसे बेहतर घर वो हे जिस मे कोई यतीम हो और उसके साथ

अच्छा व्यवहार किया जाता हो, और मुसलमानो का सबसे बुरा घर वो हे जिस मे कोई यतीम हो और उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता हो.

३} मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

अगर कोई आदमी अपने दिल की सख्ती का इलाज़ करना चाहे तो शफाकत और रहमत का काम करना शुरू कर दे. जरूरतमंद और बेसहारा लोगों की ज़रूरत पूरी करे, और उनके कामों मे उनकी मदद करे तो उसके दिल की सख्ती खत्म हो जायेगी और उसके दिल मे दया व रहम पैदा होगा.

४} नसाई की रिवायत का खुलासा | रावी खुवैलिद बिन उमर रदी.

रसूलुल्लाहﷺ के कहने का ये अन्दाज़ बडा ही प्रभावित हे जिसके जरिये आपﷺ ने लोगों को ये हिदायत दी की यतीमों और पतनीयो के हक का एहतराम करो, इस्लाम से पहले अरब दुनिया मे ये दोनो सबसे ज्यादा मज़लूम थे, यतीमों के

साथ आमतौर पर बुरा सुलूक किया जाता और उनकी हकमारी की जाती, इसी तरह औरत का भी कोई मकाम ना था.

५} अबू दाऊद की रिवायत का खुलासा.

अगर किसी यतीम की देखभाल करने वाला मालदार हे तो उसको कुरान की हिदायत के मुताबिक कुछ ना लेना चाहिए लेकिन अगर वो गरीब हे और यतीम के पास जायदाद हे तो ये उसके माल की हिफाज़त करेगा उसको बढाने की कोशिश करेगा और उसमे से अपना खर्चा लेगा, लेकिन उसके लिए जाईज नही की उसके माल को उसके जवान होने से पहले जल्दी-जल्दी हज़म कर जाए, और वो यतीम के माल से अपनी जायदाद नही बना सकता.

अल्लाह से ना डरने वाले बेईमान लोग यतीमों के माल को होशियारी के साथ अपनी जायदाद बना लेते हे या उसके बडे होने से पहले उसकी पूरी जायदाद को खा-पी कर उडा देते हे.

सुरे निसा मे अल्लाह ने यतीमों के माल के सिलसिले मे यही हिदायत दी हे जो इस हदीस मे बयान हुई हे फरमाया, तरजुमा- और यतीमों के माल ना खावो फुझूलखर्ची के साथ, और जल्दी करते हुवे उनके बडे होने के डर से, और जो मालदार हो तो उसको चाहिए की यतीम का माल खाने से बहुत बचे और जो गरीब हो तो उसको यतीम के माल मेसे दस्तूर के मुताबिक खाना चाहिए.

६} मुअजम की रिवायत का खुलासा | तिबरानी रावी जाबिर रदी.

अपनी औलाद को तालीम व तरबीयत के सिलसिले मे मारा जा सकता हे इसी तरह यतीम को भी दीन और तेहज़ीब व तमीज सिखाने के सिलसिले मे मारा जा सकता हे, बिला वजह बात-बात पर बच्चों की पिटाई करना, रसूलुल्लाहﷺ के तरीका के खिलाफ हे और यतीम को मारना तो बहुत बडा गुनाह हे.